डॉ. गैरी येट्स, जेरेमिया, व्याख्यान 3
ऐतिहासिक सेटिंग्स, अंतर्राष्ट्रीय

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी तीसरी प्रस्तुति दे रहे हैं। इस तीसरे सत्र का ध्यान उन ऐतिहासिक सेटिंग्स पर होगा जो यिर्मयाह की पुस्तक की पृष्ठभूमि में भूमिका निभाती हैं, विशेष रूप से बेबीलोन के साथ इज़राइल के संबंधों पर।

किसी भी बाइबिल पुस्तक को समझने के लिए महत्वपूर्ण चीजों में से एक उस पुस्तक की ऐतिहासिक सेटिंग और संदर्भ को समझना है। कई मायनों में यह हमें यह समझने का मौका देता है कि भगवान लोगों के साथ कैसे बातचीत कर रहे हैं, संदेश किस बारे में है। और मुझे लगता है कि यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि हम यिर्मयाह में भविष्यवक्ताओं का अध्ययन कर रहे हैं ताकि यह समझ सकें कि यिर्मयाह के जीवन में क्या स्थिति थी और कौन सी ऐतिहासिक परिस्थितियाँ चल रही थीं।

उनके संदेश को समझना महत्वपूर्ण है। कई बार जब लोग आज बाइबल का अध्ययन कर रहे हैं, तो हम एक बहुत ही व्यावहारिक प्रश्न से शुरुआत करते हैं। हम जानना चाहते हैं कि पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है? लेकिन उस मूलभूत प्रश्न से शुरुआत करना अधिक महत्वपूर्ण है जो वास्तव में उससे पहले है, पाठ का क्या अर्थ है? यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह वह ऐतिहासिक संदर्भ है जिसमें वह संदेश दिया गया है।

बहुत से लोग, जब वे बाइबल में अपने पसंदीदा छंदों या शायद अपने जीवन छंदों के बारे में बात करते हैं, तो यिर्मयाह 29:11 की ओर इशारा करते हैं। मैं जानता हूं कि मेरे पास आपके लिए क्या योजनाएं हैं, आपको समृद्ध बनाने और आपको भविष्य देने की क्या योजनाएं हैं। लेकिन बहुत से लोग वास्तव में यह नहीं समझते हैं कि वह कविता किस बारे में है क्योंकि वे ऐतिहासिक संदर्भ को नहीं समझते हैं। वे सोचते हैं कि यह एक सामान्य वादा है कि भगवान उन्हें समृद्ध और सफल बनाने जा रहे हैं, कि उनके जीवन में सब कुछ बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा वे चाहते हैं।

लेकिन यिर्मयाह 29 वास्तव में बेबीलोन में निर्वासितों के लिए लिखा गया था। यिर्मयाह इन लोगों को यह वचन तो दे रहा था परन्तु यह भी बता रहा था कि वे 70 वर्ष तक निर्वासन में रहने वाले हैं। इसलिए, उनके लिए समृद्धि में हर चीज़ का उस तरह से बदल जाना शामिल नहीं था जैसा वे चाहते थे।

इसमें 70 वर्षों का निर्णय शामिल था। और जो चीजें घटित होंगी जो उनकी भलाई के लिए होंगी, अंततः उनके बच्चों और आने वाली पीढ़ियों की बहाली होंगी। इसलिए, ऐतिहासिक संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है।

यशायाह की किताब पर हाल ही में एक अध्ययन हुआ है जिसमें यशायाह की किताब से एक श्लोक लिया गया है और उसे एक ऐसे अंश के रूप में देखा गया है जो अमेरिका के फैसले को

उजागर कर रहा है। फिर, बाइबिल की भविष्यवाणी के उस प्रकार के उपचार बहुत लोकप्रिय हैं। वे किताबें और वीडियो बेचते हैं, लेकिन वे ऐतिहासिक संदर्भ को नजरअंदाज करते हैं।

इसलिए, हमें बेबीलोन के संकट और इस तथ्य के प्रकाश में यिर्मयाह को समझना होगा कि परमेश्वर ने यहूदा के लोगों के विरुद्ध न्याय करने के लिए बेबीलोनियों को खड़ा किया था। एक अर्थ में, जो होने वाला था वह यह था कि परमेश्वर इस न्याय के माध्यम से इस्राएल की पुरानी दुनिया को नष्ट करने जा रहा था, लेकिन परमेश्वर भविष्य में कुछ ऐसा खड़ा करने जा रहा था जो आशा प्रदान करेगा। इसलिए, यिर्मयाह और बेबीलोन का संकट, यिर्मयाह के संदेश और सेवकाई की अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, इस घंटे में हमारे सत्र का केंद्रबिंदु होने जा रहा है।

मैं व्यवस्थाविवरण 28 पर वापस जाना चाहता हूँ। व्यवस्थाविवरण 28 फिर से वाचा के शापों और वाचा के आशीर्वादों को बताता है जो इस्राएल को अनुभव होंगे यदि वे परमेश्वर के नियमों और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेंगे। यहाँ एक शाप था जिसके बारे में परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी थी।

वह कहता है, "...प्रभु तुम्हारे विरुद्ध दूर से, पृथ्वी के छोर से, एक राष्ट्र को लाएगा, जो उकाब की तरह झपट्टा मारता हुआ आएगा, एक ऐसा राष्ट्र जिसकी भाषा तुम नहीं समझोगे, एक कठोर राष्ट्र जो बूढ़ों का सम्मान नहीं करेगा और न ही बच्चों पर दया दिखाएगा। वह तुम्हारे मवेशियों के बच्चे, तुम्हारी भूमि की उपज तब तक खाएगा जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाओगे। वह तुम्हारे लिए अनाज, दाखमधु या तेल नहीं छोड़ेगा, न ही तुम्हारे झुंड या भेड़-बकरियों के बच्चे तब तक छोड़ेगा जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाओगे।" इस अंश में आगे कहा गया है कि युद्ध और घेराबंदी की भयावहता से निपटने की कोशिश में इस्राएल नरभक्षण तक पहुँच जाएगा।

इसके अलावा, उन श्रापों के एक हिस्से में निर्वासन की धमकी भी शामिल थी, कि उन्हें वादा किए गए देश से बाहर निकाल दिया जाएगा और उनसे छीन लिया जाएगा। पद 64 कहता है, "...और यहोवा तुम्हें पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक सब देशों के बीच तितर-बितर करेगा, और वहां तुम लकड़ी और पत्थर के पराये देवताओं की उपासना करोगे, जिन्हें न तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते थे। और इन जातियों के बीच में तुझे विश्राम न मिलेगा, और तेरे पांव के तलवे के लिये कोई विश्रामस्थान न होगा, परन्तु यहोवा वहां तुझे कांपता हुआ मन, और थकती हुई आंखें, और निस्तेज प्राण देगा।

तुम्हारा जीवन तुम्हारे सामने संदेह में लटका रहेगा, रात और दिन भय से भरे रहेंगे, और तुम्हारे जीवन का कोई आश्वासन नहीं होगा। सुबह तुम कहोगे, काश शाम हो जाती, और शाम को तुम कहोगे, काश सुबह हो जाती, क्योंकि तुम्हारा हृदय भय से भर जाएगा और जो दृश्य तुम्हारी आँखें देखेंगी। और प्रभु तुम्हें जहाज़ों में मिस्र वापस ले जाएगा, एक ऐसी यात्रा जिसे मैं वादा करता हूँ कि तुम फिर कभी नहीं करोगे।"

इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे अवज्ञाकारी रहे, तो वह उन्हें वादा किए गए देश से बाहर निकाल देगा, उद्धार का इतिहास उलट जाएगा, और वे अंततः मिस्र वापस चले जाएँगे।

यिर्मयाह के दिनों में, बिल्कुल यही हो रहा था। यिर्मयाह के समय से पहले, प्रभु ने भविष्यवक्ताओं की पहली लहर को खड़ा किया, जो कि शास्त्रीय भविष्यवक्ता थे, ताकि वे इस्राएल और यहूदा के लोगों को यह घोषणा कर सकें कि परमेश्वर उन्हें निर्वासन में भेजने के लिए तैयार है। ऐसा करने के लिए परमेश्वर जिस राष्ट्र का उपयोग कर रहा था, वह अश्शूर था।

अश्शूरियों ने अंततः 722 ईसा पूर्व में इस्राएल के उत्तरी राज्य को निर्वासित कर दिया, और उन्होंने यहूदा के दक्षिणी राज्य के लिए भी भारी पीड़ा और उत्पीड़न का कारण बना। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता हमें याद दिलाते हैं कि यह केवल एक सैन्य संकट या राजनीतिक घटना नहीं थी। यह मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक संकट भी था। प्रभु इन राष्ट्रों को ऊपर उठा रहे थे।

प्रभु इन सैन्य अभियानों को लोगों के विरुद्ध उनकी अवज्ञा के लिए दण्ड के रूप में निर्देशित कर रहे थे। इसलिए , सबसे पहले, परमेश्वर ने अश्शूर की शाही शक्ति को खड़ा किया, और भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं कि अश्शूर परमेश्वर के क्रोध की छड़ी थी। वे परमेश्वर के दण्ड को क्रियान्वित कर रहे थे।

पॉल गिलक्रिस्ट कहते हैं कि इस्राएल का धर्मत्याग असीरियन साम्राज्यवाद का उत्प्रेरक था। यह सिर्फ़ एक राजनीतिक घटना नहीं थी, यह सिर्फ़ एक सैन्य संकट नहीं था। परमेश्वर इन राष्ट्रों और इन सेनाओं और उनके आंदोलनों के मामलों को अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए संचालित कर रहा था।

किसी ने कहा है कि भविष्यवक्ताओं को पढ़ने से सबसे बड़ी राहत यह है कि हमें यह समझ में आता है कि परमेश्वर अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को नियंत्रित करता है। यदि परमेश्वर ने प्राचीन निकट पूर्व में राजाओं और राष्ट्रों और उनकी सेनाओं और उनके आंदोलनों के साथ जो कुछ हुआ, उसका निर्देशन, नियंत्रण और पर्यवेक्षण किया, तो आज जब हम अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को देखते हैं, तो वही बात सच है। परमेश्वर की शक्ति कम नहीं हुई है।

सत्ता का हस्तांतरण नहीं हुआ है। परमेश्वर ने इसे मनुष्यों को नहीं दिया है। परमेश्वर दुनिया में होने वाली घटनाओं को नियंत्रित करता है, और परमेश्वर इन राष्ट्रों का उपयोग इस्राएल और यहूदा के लोगों पर न्याय लाने के लिए कर रहा था।

यिर्मयाह के दिनों में, हम अश्शूरियों से बेबीलोनियों की ओर स्थानांतरण देखना शुरू करते हैं। बेबीलोनवासी मेसोपोटामिया के दक्षिणी भाग में अश्शूर के प्रतिद्वंद्वी थे। उनके बीच हमेशा संघर्ष होता था।

जिस वर्ष यिर्मयाह को भविष्यवक्ता कहा गया, उसी वर्ष 626 ई.पू. में, योशियाह के 13वें वर्ष में, नबोपोलासर नामक व्यक्ति बेबीलोन का राजा बना। तीन साल बाद, 623 में, उसने बेबीलोन की स्वतंत्रता की घोषणा की और वास्तव में अश्शूरियों को बेबीलोन से बाहर निकालकर इसे पूरा करने में सक्षम था। इसके परिणामस्वरूप, उसने नव-बेबीलोनियन साम्राज्य की स्थापना की।

नबूकदनेस्सर का पिता नबोपोलास्सर था। अपने मंत्रालय के शुरुआती चरणों में, यिर्मयाह ने लोगों को चेतावनी दी कि परमेश्वर उत्तर से एक दुश्मन भेजने की तैयारी कर रहा है। और यिर्मयाह की

पुस्तक में, उस दुश्मन की पहचान विशेष रूप से बेबीलोन के रूप में नहीं की गई है जब तक कि हम यिर्मयाह अध्याय 20 तक नहीं पहुँच जाते।

अब, हम नहीं जानते. क्या यिर्मयाह को इस सेना की पहचान पता थी? क्या वह उस राष्ट्र को जानता था जो इज़राइल पर हमला करने वाला था? हम नहीं जानते, लेकिन हम देख सकते हैं कि अपने मंत्रालय की शुरुआत में, भगवान नव-बेबीलोनियन साम्राज्य को उस भूमिका के लिए तैयार कर रहे थे जो वह बाइबिल के इतिहास में निभाने जा रहा था। यिर्मयाह बाद में कहेगा कि बेबीलोन सारी पृथ्वी का हथौड़ा था। खैर, भगवान ही वह था जो अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उन्हें अपने उपकरण के रूप में उपयोग कर रहा था।

इसलिए, जैसे ही नाबोपोलास्सर ने अपना साम्राज्य स्थापित किया, और हम असीरियन साम्राज्य के पतन और पतन को देखते हैं, 614 में, बेबीलोनियन और मेड्स एक साथ शामिल हो गए और असीरियन को हरा दिया, जिससे उनकी राजधानी आशेर का पतन हो गया। 612 में, बेबीलोनियों और मादियों के कब्जे में आने वाला अगला असीरियन केंद्र नीनवे था। यह वह शहर था जहां यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी, और यह वह शहर था जहां नहूम ने भविष्यवाणी की थी कि अश्शूरियों की क्रूरता के कारण भगवान उनके खिलाफ न्याय लाएंगे।

अंततः, 609 में, अश्शूरियों पर अंतिम प्रहार हारान में हुआ। और यहूदा का राजा, योशिय्याह, वास्तव में उस वर्ष मेगिद्दो में मारा गया था क्योंकि वह असीरियन साम्राज्य को आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए मिस्रियों को उत्तर की ओर बढ़ने से रोकने की कोशिश कर रहा था। योशिय्याह का मानना था कि बेबीलोन साम्राज्य और उनका उदय अंततः उसे यहूदा की स्वतंत्रता दिलाने में सक्षम बनाएगा।

और इसलिए, उन्होंने इस नए साम्राज्य के उदय का समर्थन किया। वह मिस्रियों को रोकने की कोशिश में मारा गया, लेकिन मिस्रवासी वास्तव में अश्शूरियों की मदद करने में असमर्थ थे और बेबीलोन हार गया। और वास्तव में वह असीरियन साम्राज्य का अंत था।

अंततः, 605 में, वह निर्णायक युद्ध जिसने बेबीलोन को प्राचीन निकट पूर्व में प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया, सीरिया में इज़राइल के उत्तर में कारकेमिश नामक स्थान पर हुआ। जब नबूकदनेस्सर के पुत्र, नबूकदनेस्सर, उसकी सेनाओं ने मिस्रियों को हराया और उस समय अश्शूरियों के पास जो कुछ भी बचा था, उस बिंदु से आगे, पूरा सीरिया-फिलिस्तीन नव-बेबीलोनियन नियंत्रण में आने वाला था। यह जीत हासिल करने और मिस्रियों को उनकी मातृभूमि में वापस धकेलने के बाद, नबूकदनेस्सर दक्षिण में आया और मूल रूप से पूरे हैटीलैंड या सीरिया-फिलिस्तीन पर अधिकार कर लिया।

वह 605 ईसा पूर्व में यहूदी निर्वासितों के पहले समूह को ले गया। वह यरूशलेम आया. उन निर्वासितों में डैनियल और धनी, प्रभावशाली और युवा लोगों का एक छोटा समूह शामिल था, जिन्हें यहूदा से ले जाया जाएगा, बेबीलोनियों की भाषा, धर्मशास्त्र, संस्कृति, विश्वासों, प्रथाओं में प्रशिक्षित किया जाएगा और फिर अपने लोगों पर शासन करने के लिए वापस भेज दिया जाएगा।

वह बेबीलोन निर्वासन की पहली लहर थी। जब वह 605 में सीरिया-फिलिस्तीन में था, तो नबूकदनेस्सर को यह भी खबर मिली कि उसके पिता की मृत्यु हो गई है, और इसलिए उसे सिंहासन पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए मेसोपोटामिया, बेबीलोन वापस जाना पड़ा। यहूदा में निर्वासन की पहली लहर भी उसी समय दूर ले जाई गई थी।

इस बिंदु से आगे, मूल रूप से, हर साल यही होता कि नबूकदनेस्सर और उसकी सेना पश्चिम की ओर सीरिया-फिलिस्तीन में मार्च करती, और वे कर इकट्ठा करते। यहूदा अब बेबीलोन का जागीरदार था। वे बेबीलोन के अधीन थे।

और उस समय से पहले जब बेबीलोन ने नियंत्रण कर लिया था, असीरियन प्रमुख शक्ति थे, लेकिन अब यहूदा को कर देना होगा और बेबीलोन के प्रति अपनी वफादारी छोड़नी होगी। निर्वासन की दूसरी लहर निर्वासन की दूसरी लहर 597 ईसा पूर्व में हुई थी। और इस समय के दौरान, 605 और 597 के बीच, विशेष रूप से यहूदा के एक राजा, जिसका नाम यहोयाकीम था, मिस्र या बेबीलोन के प्रति अपनी वफादारी देने के बीच आगे-पीछे होता रहा था।

और यहोयाकीम, कुछ अर्थों में, उम्मीद कर रहा था कि वह बेबीलोनियों के खिलाफ मिस्रियों को हरा सकता है। और वह लगातार बेबीलोन के खिलाफ विद्रोह के विकल्प और संभावना पर विचार कर रहा था। खैर, नबूकदनेस्सर अंततः 602 ईसा पूर्व में इससे थक गया। उसने यहोयाकीम को बेड़ियों और बंधनों में जकड़ लिया।

वह उसे वापस ले गया. वह उसे कैदी के रूप में वापस बेबीलोन ले जाने के लिए तैयार था। यहोयाकीम ने बेबीलोन के प्रति अपनी वफादारी की पुष्टि की और उसने उसे रिहा कर दिया और उसे सिंहासन पर बने रहने की अनुमति दी।

598 में, उसने फिर से विद्रोह किया और नबूकदनेस्सर और उसकी सेना के सैनिक इस समस्या से निपटने के लिए यहूदा की ओर बढ़े। इससे पहले कि वे वास्तव में यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करते, यहोयाकीम मर चुका था। उसे शायद उसके अपने लोगों ने ही मारा होगा।

यहोयाकीम नाम का एक नया राजा सिंहासन पर बैठा, लेकिन इस समय नबूकदनेस्सर और उसके सैनिकों ने यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा कर लिया। और वे निर्वासितों की दूसरी लहर को वापस बेबीलोन ले गए। उसने राजा यहोयाकीम को सिंहासन से उतार दिया, जो केवल 18 वर्ष का था और सिंहासन पर केवल तीन महीने ही बैठा था।

वह उसे एक कैदी के रूप में वापस ले गया। निर्वासन की एक बड़ी लहर भी इस निर्वासन का हिस्सा थी। और उन निर्वासितों में सबसे प्रसिद्ध भविष्यवक्ता यहेजकेल था।

और चार या पाँच वर्ष बाद, जब यहेजकेल को बन्धुवाई में ले जाया गया, तब परमेश्वर ने उसे बाबुल में बन्धुवाईयों के लिये भविष्यद्वक्ता बनने के लिये बुलाया। यिर्मयाह उन लोगों के लिए परमेश्वर की आवाज़ और परमेश्वर का भविष्यवक्ता था जो अभी भी निर्वासन की इन विभिन्न लहरों से जूझ रहे थे। हम इस पर कैसे प्रतिक्रिया दें? हम बेबीलोनियों को कैसे जवाब दें? इसके

बीच में भगवान क्या कर रहे हैं? ईजेकील और डैनियल उन लोगों के लिए भविष्यसूचक आवाज़ होंगे जो इस दौरान निर्वासन में रह रहे थे।

लेकिन वह 597 का निर्वासन था। बाइबिल के अतिरिक्त इतिहास की दिलचस्प चीजों में से एक यह है कि यरूशलेम शहर पर बेबीलोन के वास्तविक कब्ज़े की पुष्टि स्वयं बेबीलोन के इतिहास में की गई है। बेबीलोनियाई इतिहास हमें नबूकदनेस्सर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं के बारे में बताते हैं, जैसे वह कहाँ गया, उसने कहाँ मार्च किया, वह अपने सैनिकों को कहाँ ले गया, और उसे क्या कर मिला।

वर्ष 598 और 597 के वृत्तांतों में, हमारे पास यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करने का रिकॉर्ड है। बेबीलोनियाई वृत्तांत यह कहता है: किसलेव के महीने में, जो कि दिसंबर 598 है, बेबीलोनिया के राजा ने अपने सैनिकों को संगठित किया और पश्चिम की ओर मार्च किया। उसने यहूदा के नगर यरूशलेम के विरूद्ध डेरा डाला।

अदार की 2 तारीख को, जो कि 16 मार्च, 597 है, उसने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और उसके राजा को पकड़ लिया। उसने वहां अपनी पसंद का राजा नियुक्त किया। उसने उसका भारी कर लिया और उसे बेबीलोन ले गया।

तो, जो वृत्तांत हम बेबीलोन के इतिहास में पढ़ते हैं, वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा हम बाइबिल के अभिलेख में पढ़ते हैं। और आप इसकी कहानियाँ द्वितीय राजा अध्याय 24 श्लोक 10 से 17 में पढ़ सकते हैं। यिर्मयाह की पुस्तक में, हमारे पास 597 ईसा पूर्व में बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने की एक कहानी है।

यिर्मयाह की पुस्तक का अंतिम परिशिष्ट एक और विवरण है जो 2 राजा 25 से बहुत मिलता-जुलता है, जो हमें फिर से यरूशलेम पर कब्ज़ा करने की कहानी देता है। यह एक केंद्रीय घटना थी। अब, जब नबूकदनेस्सर ने दूसरी बार शहर पर कब्ज़ा किया, तो उसने शहर को नष्ट नहीं किया।

उसने यहूदा में सरकार को खत्म नहीं किया। वास्तव में, उसने जो किया वह यह था कि उसने दाऊद के वंश से एक और यहूदिया के राजा को सिंहासन पर बिठाया, और उस राजा का नाम सिदकिय्याह था। सिदकिय्याह यहूदा का अंतिम राजा बन गया।

और सिदकिय्याह को मूल रूप से बेबीलोनियों ने अपनी कठपुतली के रूप में स्थापित किया था। उसे बेबीलोनियों के प्रति अपनी वफ़ादारी देनी थी। उसे बेबीलोनियों को कर देना था।

उसे यह सुनिश्चित करना था कि सैन्य या सशस्त्र प्रतिरोध न हो। दूसरे शब्दों में, वह बेबीलोन के हितों की रक्षा के लिए वहाँ था। समस्या यह है कि जैसे ही सिदकिय्याह राजा बना, उसने अपने सलाहकारों, सैन्य अधिकारियों की बात माननी शुरू कर दी जो उसे विद्रोह करने और बेबीलोन के आधिपत्य का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे।

यिर्मयाह सिदकिय्याह से कह रहा था कि इस समय में बचने का एकमात्र तरीका बेबीलोनियों के अधीन रहना, उन्हें श्रद्धांजलि देना और यह स्वीकार करना है कि हमारे इतिहास में इस समय, परमेश्वर ने बेबीलोनियों को न्याय के साधन के रूप में खड़ा किया है। यिर्मयाह की सेवकाई के शुरुआती दिनों में, यिर्मयाह ने लोगों से कहा था कि वे पश्चाताप कर सकते हैं और न्याय से बच सकते हैं, या वे अपने पापी तरीकों से चलते रह सकते हैं और नष्ट हो सकते हैं। यिर्मयाह की सेवकाई के आरंभ में उनके पास दूसरे राष्ट्र के वर्चस्व से बचने का एक मौका था।

लेकिन इस समय, 597 में यरूशलेम पर विजय के बाद, यिर्मयाह ने राजा से कहा, आपके पास एकमात्र विकल्प बाबुल के सामने आत्मसमर्पण करना या नष्ट हो जाना है। हम राजाओं और यिर्मयाह और इतिहास दोनों से सीखते हैं क्योंकि हम सिदकिय्याह के बारे में पढ़ते हैं कि वह एक बहुत ही कमजोर शासक था। और अंततः, उसने बाबुल के खिलाफ विद्रोह करने का फैसला किया, वही गलती जो यहोयाकीम ने की थी जिसके कारण बाबुल पर दूसरा आक्रमण हुआ था।

उसने बेबीलोनियों के खिलाफ विद्रोह करने की गलती की , और बेबीलोनियों को फिर से यरूशलेम लौटना था। इसलिए, नबूकदनेस्सर अपनी सेना लेकर आता है, आक्रमण होने वाला है, बेबीलोनियों द्वारा यहूदा की भूमि पर एक बड़ा हमला होने वाला है, और यिर्मयाह फिर से राजा को सलाह देता है। और हम सिदकिय्याह को एक कमज़ोर शासक के रूप में देखते हैं जो लगातार यिर्मयाह को एक सम्मेलन के लिए बुलाता है, लगातार यिर्मयाह से सलाह और परामर्श लेता है, या यिर्मयाह से पूछता है, मुझे क्या करना चाहिए, या क्या तुम हमारे लिए प्रार्थना करोगे कि भगवान हमें बचाए? और यिर्मयाह लगातार उसे आत्मसमर्पण करने या नष्ट होने के लिए कहता जा रहा है।

जब बेबीलोन की सेना ने यहूदा के शहरों पर कब्जा करना शुरू कर दिया, और हम उस बिंदु पर आ गए जहां केवल तीन शहर बचे हैं, अजेका, लाकीश और यरूशलेम, यिर्मयाह कहना जारी रखता है, आत्मसमर्पण करो या नष्ट हो जाओ। दूसरी ओर, ऐसे सैन्य अधिकारी और सैन्य सलाहकार हैं जो यिर्मयाह से बिल्कुल नफरत करते हैं क्योंकि वे बेबीलोनियों के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध की सलाह देना जारी रखते हैं। वे कहने जा रहे हैं, देखो, यिर्मयाह हमारे सैनिकों के हाथों को कमजोर कर रहा है, और वे यिर्मयाह को लोगों से दूर जेल में कैद रखने के लिए हर संभव प्रयास करने जा रहे हैं, जहां वह उन्हें इस संदेश से प्रभावित नहीं कर सकता है कि वे मूलतः देशद्रोह के रूप में देखें।

सिदकिय्याह बार-बार इस सवाल पर विचार करता है: क्या मैं यिर्मयाह की बात सुनूँ या अपने सैन्य अधिकारियों की? उसने यिर्मयाह से उसके लिए प्रार्थना करने को कहा, उसने यिर्मयाह से उसे सलाह देने को कहा, और फिर उसने उसे वापस जेल भेज दिया। एक अवसर पर, सैन्य अधिकारी यिर्मयाह पर इतने क्रोधित हो जाते हैं कि वे उसे एक कुण्ड में फेंक देते हैं और उसे मरने के लिए वहीं छोड़ देते हैं। सिदकिय्याह ऐसा होने देता है जब तक कि दूसरा अधिकारी उसे यह विश्वास नहीं दिला देता कि हमें भविष्यवक्ता को कुण्ड से बाहर निकालना होगा। इसलिए, सिदकिय्याह एक ऐसा व्यक्ति है जो इन दो विकल्पों के बीच अविश्वसनीय रूप से उलझा हुआ है, और अंततः, वह विद्रोह करने और विरोध करने का विकल्प चुनता है।

बेबीलोनियाई, इस बार, यरूशलेम पर बार-बार कब्जा करने जा रहे हैं, यह यरूशलेम पर कब्जा है जो हमारे पास यिर्मयाह 39 और यिर्मयाह 52 में है। और शहर पर कब्जा करने के बाद, वे एक महीने बाद वापस आने वाले हैं, और वे इसकी दीवारें गिरा देंगे, वे मंदिर को नष्ट कर देंगे, वे शहर को आग से जला देंगे। जब बेबीलोनियों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया तो सिदकिय्याह ने रात में अपने परिवार के साथ भागने की कोशिश की।

वह ज्यादा दूर नहीं जा पाया. उसे जेरिको के मैदानों में पकड़ लिया गया, उसे सीरिया के रिबला ले जाया गया, और अंततः उसे एक कैदी के रूप में बेबीलोन वापस ले जाया गया। उसके पुत्रों को उसके सामने मार डाला गया, और आखिरी चीज़ जो सिदकिय्याह ने देखी वह उसके पुत्रों की हत्या या फाँसी थी, और फिर बेबीलोनियों ने उसकी आँखें निकाल लीं और उसे बंदी बना लिया।

तो यही वह संकट है जिसके लिए परमेश्वर ने यिर्मयाह को उठाया। संकट की शुरुआत में, आपके पास एक विकल्प होता है। आप पश्चाताप कर सकते हैं, आप परमेश्वर के पास वापस आ सकते हैं, आप उसके पास वापस आ सकते हैं, आप अपने तरीके बदल सकते हैं, और यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप न्याय से बच सकते हैं।

यह आक्रमण, यह सेना जो आप पर हमला करने के लिए इंतजार कर रही है, भगवान उसे भेजने से पीछे हट जाएंगे। उनके लिए पश्चाताप करने का एक वास्तविक मौका है। उनके निर्णय, उनके विकल्प और भगवान के प्रति उनकी प्रतिक्रियाएँ मायने रखने वाली हैं।

लेकिन एक बार विद्रोह और प्रतिरोध शुरू हो गया, 598 में एक बार, यहोयाकिम ने विद्रोह करने और बेबीलोनियाई शासन का विरोध करने का फैसला किया। उस बिंदु से लेकर 586 में शहर के नष्ट होने तक का विकल्प या तो समर्पण या नष्ट हो जाने में से एक होगा। दुख की बात है कि यहूदा के राजा और देश के अंतिम नेताओं ने ईश्वर की बात न सुनने, भविष्यवक्ता की बात न सुनने और प्रतिरोध और विद्रोह जारी रखने का विकल्प चुना। हमारे पास एक और अतिरिक्त-बाइबिल दस्तावेज़ है जो हमें कुछ ऐतिहासिक संदर्भ और सेटिंग को समझने में मदद करता है कि इस समय के दौरान यहूदा में रहना कैसा रहा होगा।

और उन दस्तावेजों को लाकिश पत्र कहा जाता है। और लाकीश शहर में सेनापति, जो यरूशलेम से लगभग 25 मील दूर यहूदा में था, यह एक किला शहर था जिसे यरूशलेम को दुश्मन के आक्रमण से बचाने के लिए बनाया गया था, और वह सेनापति यरूशलेम में था। और वे इस सेना की समस्या से निपट रहे हैं जो लाकीश और यरूशलेम दोनों पर दबाव बनाना शुरू कर रही है।

यरूशलेम के नगर एक-एक करके नष्ट होते जा रहे हैं। इन खतों में एक नबी का जिक्र है जो लोगों से बात कर रहा है. हम नहीं जानते कि यह यिर्मयाह है या नहीं।

लाकीश के सेनापति के नाम का उल्लेख है, उसका नाम योआश है। राजा द्वारा लोगों को मिस्र भेजने के बारे में उल्लेख हैं, और इसमें एक उल्लेखनीय समानता है कि कैसे यहोयाकीम भविष्यवक्ता ऊरिय्याह की हत्या के लिए लोगों को मिस्र भेजने जा रहा है। एक पत्र में शिकायत है

कि ऐसे सैन्य अधिकारी हैं जो सैनिकों के हाथों को कमजोर कर रहे हैं, जो बिल्कुल वही बात है जो अध्याय 38 में यिर्मयाह के बारे में कही गई है।

और फिर अध्याय 34, श्लोक 7 में यिर्मयाह में, एक उल्लेख है कि यहूदा के केवल तीन शहर जो बचे हुए हैं वे लाकीश, अजेका और यरूशलेम हैं। लाकिश पत्रों में से एक में, कमांडर यह कहने जा रहा है, प्रकाश, सिग्नल फायर अज़ेका की सुरक्षा का संकेत देता है, कि हमारे सैनिक अभी भी वहां हैं। सिग्नल की आग अब नहीं जल रही है.

और इसलिए, हम इस संभावना की कल्पना कर सकते हैं कि अजेका शहर जो अभी भी यिर्मयाह 34 में खड़ा है, वास्तव में उस विशेष पत्र में गिर गया है। यरूशलेम शहर पर बुराई का प्रभाव जारी रहा और अंततः, शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया और उसे नष्ट कर दिया गया। यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करने के बाद, बेबीलोनियों ने यिर्मयाह को जेल से रिहा कर दिया।

तो, यरूशलेम की बन्धुवाई और निर्वासन ने वास्तव में यिर्मयाह की स्वतंत्रता ला दी। और बेबीलोनियों ने यिर्मयाह को दो विकल्प दिए। उन्होंने कहा कि वह उनके साथ बेबीलोन जा सकता है, लेकिन उन्होंने उसे सलाह दी और सिफारिश की कि वह देश में रहे और सहायक बने और गदल्याह की मदद करे, जो यहूदा का एक व्यक्ति था जिसे बेबीलोनियों द्वारा नियुक्त किया गया था। भूमि का राज्यपाल.

अंततः, यिर्मयाह ने उस देश में रहने वाले गरीब लोगों के साथ रहने का चुनाव किया। और मुझे लगता है, कुछ मायनों में, यह यिर्मयाह के दिल में सेवकाई के लिए, लोगों के लिए उसके प्यार को दर्शाता है। यिर्मयाह के लिए, बेबीलोन जाना आसान होता।

बेबीलोन के लोग जानते थे कि उसने मूल रूप से उनके बारे में एक अनुकूल संदेश का प्रचार किया था। वह आत्मसमर्पण को प्रोत्साहित कर रहा था। वे उसके साथ अनुकूल व्यवहार करते।

लेकिन यिर्मयाह ने यह चुनाव किया कि उसे लगा कि लोगों के लिए बेहतर होगा कि वे देश के गरीब लोगों के साथ रहें, वहाँ सेवा करें और गदल्याह की मदद करें और उसे प्रोत्साहित करें। गदल्याह उस परिवार का हिस्सा था जो यिर्मयाह का समर्थन करता था। और उसने यहूदा के राज्यपाल के रूप में लोगों से वही बात कही जो यिर्मयाह ने कही थी।

उसने कहा, बस जाओ, बेबीलोनियों की सेवा करो, उनके अधिकार के अधीन हो जाओ, और परमेश्वर तुम्हारी देखभाल करेगा और तुम्हारी देखभाल करेगा। और जैसा कि हम यिर्मयाह अध्याय 39 में यरूशलेम के पतन के बाद होने वाली चीजों को देखते हैं, मूल रूप से यही होता है। शरणार्थी भूमि पर वापस आने लगते हैं।

वे फसल काटना शुरू कर देते हैं। अच्छी चीज़ें हो रही हैं, लेकिन एक और विद्रोह है। इश्माएल नाम के एक व्यक्ति के नेतृत्व में एक और प्रतिरोध हुआ, जो डेविड के परिवार का हिस्सा था।

और इस विद्रोह में गदल्याह की हत्या कर दी गई. इसके परिणामस्वरूप, 582 ईसा पूर्व में, चौथा निर्वासन हुआ जहां अधिक नागरिकों, यहूदा के अधिक लोगों को बेबीलोन ले जाया गया। तो, बेबीलोनियाई निर्वासन केवल एक घटना नहीं है।

605 में निर्वासन हुआ। 597 में निर्वासन की एक बड़ी लहर हुई। 586 में यहूदा और यरूशलेम का विनाश हुआ।

और भी निर्वासन छीन लिए जाते हैं. और फिर यहूदा के मूल रूप से बेबीलोनियाई प्रांत बन जाने के बाद भी, 582 में चौथा निर्वासन हुआ। अब, गदल्याह की हत्या के परिणामस्वरूप, यिर्मयाह का अंततः अपहरण कर लिया गया और उसे मिस्र ले जाया गया।

उसे यहूदी सैन्य अधिकारियों का एक समूह वहां ले गया है। उनमें से एक का नाम जोहानान है। वह इस समूह का नेता है.

उनका मानना है कि कार्रवाई का सबसे अच्छा तरीका यरूशलेम से भागना है ताकि किसी तरह बेबीलोन के प्रतिशोध से बच सकें जो गदल्याह की हत्या के लिए आने वाले हैं। तो, यिर्मयाह को ले जाया गया। और यिर्मयाह के मंत्रालय का अंतिम संदर्भ, जैसा कि हम सबसे अच्छी तरह से बता सकते हैं, यह है कि यिर्मयाह अपने मंत्रालय का शेष समय मिस्र में एक शरणार्थी के रूप में बिताता है।

और वह वहां प्रचार कर रहा है. और अपने मुंशी और अपने सहायक बारूक के साथ, वह लोगों की सेवा कर रहा है। और वे मूर्तियों की पूजा, परमेश्वर के विरुद्ध अपना विद्रोह जारी रखे हुए हैं।

और यिर्मयाह उन्हें उपदेश दे रहा है और उन्हें वाचा की ओर वापस बुला रहा है और उन्हें याद दिला रहा है, देखो, यह तबाही, यह विपत्ति, ये सभी चीजें परमेश्वर के न्याय और वाचा के शाप के कारण हुई हैं। जब मैंने यिर्मयाह के समय में यहूदा के साथ क्या हुआ, इसकी पूरी कहानी पढ़ी, तो मुझे गलातियों के अध्याय 6 में बोने और काटने के सिद्धांत की याद आई। गलातियों का कहना है कि हम जो बोएंगे, वही काटेंगे। और हम निश्चित रूप से इसे इज़राइल और यहूदा के इतिहास में देखते हैं।

होशे की किताब कहती है कि इज़राइल ने हवा बोई और बवंडर काटा। बवंडर ये सैन्य आपदाएँ होने वाली थीं, पहले असीरियन सेना और फिर बेबीलोनियाई। परमेश्वर ने उसकी वाचा को बहुत गंभीरता से लिया।

ईश्वर ने सृष्टि में ही बोने और काटने की अवधारणा को रोप दिया है। यह उस तरीके का हिस्सा है जिसके द्वारा ईश्वर ने दुनिया को संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया है। लेकिन ईश्वर ने उस अवधारणा को उस वाचा में भी रोप दिया था जिसे प्रभु ने स्थापित किया था।

यदि आप परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं तो आपको जो वाचा अभिशाप मिलेगा वह सैन्य पराजय और विनाश है। और यही इस्राएल के साथ हुआ। 722 में, यह यरूशलेम के साथ 587 में हुआ।

यिर्मयाह की सेवकाई का यही ऐतिहासिक संदर्भ है। यही अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य है। यिर्मयाह को इन्हीं चीज़ों से निपटना पड़ रहा है।

परमेश्वर ने उसे यहूदा के अंतिम दिनों में उठाया। और शायद इस्राएल के पूरे इतिहास में सबसे निराशाजनक समय में। यही यिर्मयाह की सेवकाई का संदर्भ है।

अब, इसके परिणामस्वरूप, मैं इस बात पर ध्यान केंद्रित करके इस पाठ का समापन करना चाहूंगा कि यिर्मयाह ने बेबीलोनियों के बारे में विशेष रूप से क्या कहा था? बेबीलोन संकट पर यिर्मयाह का दृष्टिकोण क्या था? और जैसा कि वाल्टर ब्रूगेमैन हमें याद दिलाते हैं, जेरेमिया हमें सिर्फ एक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य नहीं देता है। वह हमें एक सैद्धांतिक -राजनीतिक परिप्रेक्ष्य देता है क्योंकि ईश्वर ही वह है जो इस स्थिति को नियंत्रित करता है।

और परमेश्वर ही वह है जो यहूदा के लोगों के विरुद्ध यह निर्णय ले रहा है। तो, यहां बेबीलोन संकट पर यिर्मयाह के दृष्टिकोण के बारे में कुछ बातें दी गई हैं। नंबर एक, यिर्मयाह नेताओं और यहूदा के लोगों को बताने जा रहा है कि भगवान बेबीलोनियों से लड़ रहे हैं।

मैं चाहता हूं कि आप इस बारे में सोचें कि उसने क्या सुना होगा या उसके अपने देशवासियों को यह कैसा लगा होगा। हमारा शत्रु, भगवान, उनसे लड़ रहा है। और इसलिए यिर्मयाह 21, श्लोक 3 से 7 में, यिर्मयाह को क्या कहना है।

यहोवा यों कहता है, मैं इस नगर के निवासियोंको क्या मनुष्य क्या पशु दोनोंको मार डालूंगा। पद 7, इसके बाद यहोवा की यह वाणी है, मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके कर्मचारियोंको, और इस नगर के लोगोंको जो मरी से बच गए हैं, नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दूंगा। उस परिच्छेद में जो बातें आपको सुननी चाहिए उनमें से एक है प्रथम-पुरुष सर्वनाम का बार-बार आना।

यह सिर्फ बेबीलोनवासी नहीं हैं जो इज़राइल के खिलाफ लड़ रहे हैं। यह स्वयं भगवान है. इस स्थिति पर ईश्वर संप्रभु है।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इन सेनाओं को शतरंज के मोहरों की तरह चला रहा है। याद रखें, यशायाह अध्याय 10 में, अश्शूर भगवान के क्रोध की छड़ी या छड़ी है। बाद में, जब यशायाह 45 में परमेश्वर कुस्रू को खड़ा करता है, तो यह कहा जाएगा कि कुस्रू प्रभु का चरवाहा है।

यहाँ तक कि यह भी कहा गया है कि वह ईश्वर का अभिषिक्त व्यक्ति, उसका मसीहा है। इसका मतलब यह नहीं है कि साइरस का प्रभु के साथ कोई व्यक्तिगत संबंध था। इसका सीधा सा अर्थ है कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इन राजाओं का उपयोग कर रहा था।

अब, जब यिर्मयाह नबूकदनेस्सर को यरूशलेम शहर के विरुद्ध लड़ते हुए देखता है, तो वह यह भी कर रहा है कि वह इज़राइल की पवित्र युद्ध परंपराओं को अपना रहा है। वह उन्हें उल्टा कर

रहा है. हमारे पास पुराने नियम में सभी प्रकार की कहानियाँ हैं जहाँ भगवान अपने लोगों की ओर से लड़ाई लड़ेंगे।

ईश्वर ने मिस्रियों को हराया और उन्हें पलायन के समय नीचे गिरा दिया। यह पवित्र युद्ध है। ईश्वर ने यरीहो की दीवारों को गिराकर, उस युद्ध को जीतकर, इस्राएल को वादा किए गए देश पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया था।

कई बार ऐसा होता है जब दाऊद युद्ध में जाता है, और दाऊद अपने ऊपर पेड़ों में प्रभु की सेनाओं की आवाज़ सुन सकता है। एक बार यहोशापात युद्ध में जाता है और परमेश्वर उसे असामान्य आदेश देता है कि वह प्रभु को युद्ध लड़ने की अनुमति दे। और पूरे इस्राएल को दुश्मन को मौत के घाट उतारने के लिए गाना गाना है।

ईश्वर इजरायल के लिए उनकी लड़ाई लड़ता है। लेकिन इस स्थिति में, ईश्वर दूसरी तरफ है। मैं कल्पना करता हूँ कि अगर आप बेसबॉल के प्रशंसक हैं, तो यह ऐसा होगा जैसे आपका पसंदीदा खिलाड़ी एक स्वतंत्र एजेंट बन गया है।

वह अब रेड सॉक्स के लिए नहीं खेल रहा है। वह नफरत करने वाले यांकीज़ के लिए खेल रहा है। और भगवान ने उसे दूसरी वर्दी पहना दी है।

भगवान किसी और के खिलाफ लड़ रहा है. आप कल्पना कर सकते हैं कि यिर्मयाह यहूदा देश के सैन्य अधिकारियों के बीच बहुत लोकप्रिय व्यक्ति क्यों नहीं था। यिर्मयाह एक दूसरी बात कहता है।

यिर्मयाह अध्याय 25 श्लोक 9 और यिर्मयाह अध्याय 27 श्लोक 6 में, यिर्मयाह कहने जा रहा है कि नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक है। उस शब्द का उपयोग कई अन्य स्थानों पर पुराने नियम के इतिहास में मूसा या डेविड जैसे लोगों या भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। परमेश्वर दाऊद के राजाओं के माध्यम से कार्य कर रहा था।

वे उसके उप-शासनकर्ता थे। वे उसके नौकर थे. वे उसके बेटे थे.

परन्तु अब परमेश्वर एक विदेशी राजा के द्वारा कार्य कर रहा है। और नबूकदनेस्सर, दाऊद नहीं, परमेश्वर का सेवक बन गया है। फिर, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा यशायाह साइरस के बारे में कहता है।

साइरस मेरा चरवाहा है. कुस्रू मेरा अभिषिक्त है। नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक है।

और उसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर यहूदा और अन्य राष्ट्रों को नबूकदनेस्सर के हाथ में देने जा रहा है। अध्याय 27 में एक जगह है जहां भगवान कहते हैं कि उन्होंने दोनों देशों और यहां तक कि पृथ्वी के जानवरों को भी नबूकदनेस्सर के हाथों में दे दिया है। नबूकदनेस्सर दूसरे आदम के समान बन गया है।

और वह वही है जो अस्थायी रूप से पृथ्वी पर शासन करने वाला है। नंबर तीन तीसरी बात है जो यिर्मयाह कहता है। अध्याय 25, श्लोक 11 और 12, और अध्याय 29, श्लोक 10, वनवास 70 वर्षों तक रहेगा।

और इस बारे में कुछ चर्चा और बहस चल रही है। और क्या यह एक शाब्दिक संख्या है? क्या यह... मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक गोल आकृति से अधिक है। लेकिन इसका प्रतीक यह है कि यह पूरे जीवनकाल का प्रतीक है।

जिन लोगों को निर्वासन में ले जाया गया है, ज्यादातर मामलों में, वे लोग नहीं होंगे जिन्हें निर्वासन से वापस लाया गया है। उन्हें बेबीलोन ले जाया जा रहा है। वे जीवित रहेंगे.

वे मर जायेंगे. ये उनके बच्चे होंगे. यह अगली पीढ़ी होगी.

यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा निर्गमन के दिनों में जंगल में हुआ था। जो पीढ़ी मिस्र से निकलती है वह वह पीढ़ी नहीं होगी जो भूमि पर जाती है। उसी तरह, जो पीढ़ी निर्वासन में ले जाई गई है, वह वापस लौटने वाली पीढ़ी नहीं होगी।

इसका विशेष रूप से महत्वपूर्ण कारण यह है कि 597 में यहूदा के चारों ओर पैगंबर थे। जब निर्वासन की दूसरी लहर को हटा दिया गया था, और उनका संदेश था, बहुत ही कम समय में, भगवान निर्वासितों को वापस लाने जा रहे थे। 597 में यरूशलेम पर कब्ज़ा करते समय नबूकदनेस्सर ने मंदिर के जो बर्तन छीन लिए थे, कुछ ही समय में उन चीज़ों को वापस यरूशलेम लाया जाएगा।

यिर्मयाह का संदेश यह था कि थोड़े समय में ऐसा नहीं होने वाला है। भविष्यवक्ता हनन्याह का कहना है कि दो वर्ष में यह विपत्ति समाप्त हो जाएगी। अब, यदि आप 597 और 586 के बीच यहूदा में रह रहे थे, तो आप किस भविष्यवक्ता को सुनना पसंद करेंगे? वह भविष्यवक्ता जिसने कहा, हम 70 वर्षों की आपदा का अनुभव करने जा रहे हैं, या वह भविष्यवक्ता जिसने कहा, यह सब दो वर्षों में खत्म हो जाएगा।

नेताओं और लोगों ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं का झूठ मोल लिया जो कहते थे, देखो, यह थोड़ा ही समय है। यिर्मयाह कहता है, नहीं, इसमें बहुत समय लगने वाला है। नंबर चार, यिर्मयाह यह कहने जा रहा है कि बेबीलोन का विरोध करना या उनके खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध जारी रखना व्यर्थ है।

आप सफल नहीं होंगे. आप उनसे लड़ने में सक्षम नहीं होंगे. इज़राइल की समस्या, यहूदा की समस्या, कोई सैन्य समस्या नहीं थी।

यह एक आध्यात्मिक समस्या थी। और अगर किसी तरह वे बेबीलोनियों को रोकने या विफल करने में सक्षम भी हो जाते, अगर किसी तरह वे मिस्रियों को बेबीलोनियों पर युद्ध करने के लिए राजी कर लेते, तो भी उनमें से कोई भी सैन्य विकल्प कभी काम नहीं करने वाला था। और यही कारण है कि सैन्य कमांडर नाराज़ हैं।

यही कारण है कि यिर्मयाह अध्याय 38 में, वे राजा के पास आते हैं, और वे यह कहते हैं। अब, सुनिए कि यिर्मयाह क्या कह रहा है। वह कह रहा है कि जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार, अकाल और महामारी से मरेगा।

लेकिन जो कसदियों के पास जाएगा, वह जीवित रहेगा। उसे युद्ध में अपना जीवन इनाम के रूप में मिलेगा, और वह जीवित रहेगा। इसलिए, उनके मन में और उनकी नज़र में, यिर्मयाह एक गद्दार है क्योंकि यिर्मयाह बेबीलोनियों के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए कह रहा है।

और मुझे याद है कि वियतनाम युद्ध के दौरान, लोग जेन फोंडा को देखकर उसे हनोई जेन कहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि वह दुश्मन को सांत्वना देने वाली बातें कह रही है। कई मायनों में, यिर्मयाह के दिनों में सैन्य अधिकारी उसके बारे में बिल्कुल यही सोचते थे। यिर्मयाह कहता है कि बेबीलोन के खिलाफ़ प्रतिरोध जारी रखना व्यर्थ है।

अध्याय 27 में, यरूशलेम में एक राजनीतिक सम्मेलन है जो वर्ष 593 से 592 के बीच हुआ था। फिर से, यह दूसरे निर्वासन और अंतिम निर्वासन के बीच है। और इस राजनीतिक सम्मेलन में, जिन राष्ट्रों ने यहूदा को घेर लिया है, वे राजा सिदकिय्याह से मिलने आते हैं।

और वे इस बात की रणनीति बना रहे हैं कि कैसे एक साथ मिलकर रहना है, कैसे एक साथ मिलकर काम करना है ताकि वे बेबीलोन के संकट का सामना कर सकें। यिर्मयाह उस संकट में आता है, उस सम्मेलन में एक लकड़ी के जानवर का जूआ पहनकर आता है। यह कहते हुए कि आपको बेबीलोन के जूए के नीचे रखा जाएगा।

आप इस बारे में कुछ नहीं कर सकते। अपने उन पैगम्बरों की बात मत सुनिए जो आपके विद्रोह को बढ़ावा दे रहे हैं। आप जो गठबंधन बना रहे हैं, वह एक व्यवहार्य राजनीतिक विकल्प लग सकता है, लेकिन यह काम नहीं करेगा।

प्रतिरोध करना बेकार है। अगर आप आत्मसमर्पण कर देंगे तो आपको बख्श दिया जाएगा। अगर नहीं तो आपको नष्ट कर दिया जाएगा।

यिर्मयाह बेबीलोन संकट के बारे में पाँचवाँ विचार और पाँचवाँ संदेश देने जा रहा है। वह लोगों से कहता है कि इस्राएल के भविष्य की आशा बेबीलोन में निर्वासित लोगों पर निर्भर है, न कि देश में बचे यहूदियों पर। फिर से, आइए सैन्य संकट पर वापस आते हैं।

आइए 597 में दूसरे निर्वासन और 586 में तीसरे निर्वासन, अंतिम निर्वासन के बीच के समय पर वापस जाएं। मुझे यकीन है कि जो लोग अभी भी उस देश में रह रहे थे, उनके लिए इस तरह से सोचना बहुत आसान था। हमें किसी विदेशी देश में नहीं ले जाया गया था।

हमें निर्वासित नहीं किया गया। हम अभी भी वादा किए गए देश में हैं। किसी तरह, हम इन सब से बच गए हैं।

इसलिए, हमें परमेश्वर के कृपापात्र बचे हुए लोग होना चाहिए। परमेश्वर ने हमें आशीर्वाद दिया है। परमेश्वर ने हमें देश में छोड़ दिया है।

जो लोग निर्वासन में ले जाए गए हैं, उन्होंने परमेश्वर के न्याय का अनुभव किया है। परमेश्वर उनके विरुद्ध है। परमेश्वर ने हम पर अनुग्रह किया है।

खैर, यिर्मयाह अध्याय 24 में, यिर्मयाह लोगों के पास आता है, और वह उन विचारों को लेने जा रहा है और, फिर से, मूल रूप से उन्हें उलट देता है। यिर्मयाह कहता है कि मैंने अंजीर के एक कटोरे का दर्शन देखा। वहाँ अच्छे अंजीरों का एक कटोरा था, जो फलदार था।

भविष्य है, और आशा है। खराब अंजीरों का एक कटोरा है जो इतना दूषित और सड़ा हुआ है कि उसे खाया नहीं जा सकता। और यिर्मयाह कहता है कि अच्छे अंजीर वे निर्वासित लोग हैं जिन्हें बेबीलोन ले जाया गया था।

इस्राएल के भविष्य की आशा उन्हीं पर टिकी है। जो खराब अंजीर इतने सड़े हुए हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता, वे लोग हैं जो देश में बचे हुए हैं, और वे और अधिक न्याय के लक्ष्य बनने जा रहे हैं। और परमेश्वर अंततः 586 में यरूशलेम के पतन के साथ ऐसा करता है।

अब, इसका मतलब यह नहीं था कि जो लोग निर्वासन में ले जाए गए थे, वे बहुत अच्छे लोग थे। उन्होंने धार्मिक जीवन जिया। यह बिल्कुल भी मुद्दा नहीं है।

पूरे राष्ट्र ने पाप किया था और परमेश्वर से दूर हो गए थे। लेकिन दर्शन ने जो संदेश दिया वह यह था कि भविष्य में पुनर्स्थापना की जो भी आशा है, यहूदा की भूमि में जो भी जीवन बचा है, वह यरूशलेम में रहने वाले लोगों के पास नहीं है। यह उन लोगों में नहीं है जो भूमि में बचे हैं।

परमेश्वर अंततः निर्वासितों को बहाल करके और उन्हें उनकी मातृभूमि में वापस लाकर अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने जा रहा है। यिर्मयाह 24 आगे कहता है कि ऐसा तब होगा जब वे प्रभु की ओर मुड़ेंगे और जब वे पूरे दिल से उसकी तलाश करेंगे। लेकिन वे भविष्य हैं, वे लोग नहीं जो अभी भी वहाँ हैं।

अंत में, इस पर यिर्मयाह का अंतिम दृष्टिकोण यह है कि यिर्मयाह कहता है कि परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दण्डित करने के लिए बेबीलोन का उपयोग करने के बाद, परमेश्वर बेबीलोन को उनके द्वारा किए गए पापों के लिए भी दण्डित करेगा। यिर्मयाह की पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक, यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह पुस्तक के पहले भाग को समाप्त करता है और पुस्तक के दूसरे भाग की ओर ले जाता है, यिर्मयाह अध्याय 25 में बेबीलोन के बारे में परमेश्वर का संदेश है।

यिर्मयाह, अध्याय 25, श्लोक 12 से 14 में, प्रभु यह कहते हैं, श्लोक 11 से शुरू करते हुए: सारी भूमि उजाड़ और उजाड़ हो जाएगी, और ये राष्ट्र सत्तर वर्ष तक बेबीलोन के राजा के अधीन रहेंगे। फिर इन सत्तर वर्षों के पूरे होने पर मैं कसदियोंके देश अर्थात बाबुल के राजा को उनके अधर्म

का दण्ड दूंगा, और उनके देश को सदा के लिये उजाड़ कर दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। मैं उस भूमि पर उन सभी शब्दों को लागू करूंगा जो मैंने उसके विरुद्ध कहे हैं।

इस पुस्तक में वह सब कुछ लिखा है, जो यिर्मयाह ने सब जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की थी। इसलिए प्रभु इस्राएल का न्याय करने के लिए बेबीलोन का उपयोग करने जा रहे हैं, लेकिन अंततः, ईश्वर बेबीलोन का भी न्याय करने जा रहे हैं। नबूकदनेस्सर अस्थायी रूप से भगवान का सेवक है, लेकिन भविष्य में, भगवान बेबीलोन के राजा को उसके पापों के लिए न्याय करने जा रहा है।

परमेश्वर निर्वासितों से कहता है, बेबीलोन की शांति के लिए प्रार्थना करो। अस्थायी रूप से, मैं उस राष्ट्र, उस शहर के माध्यम से काम कर रहा हूँ, लेकिन अंततः परमेश्वर का न्याय उन पर भी पड़ने वाला है। यिर्मयाह अध्याय 25 के दूसरे भाग में एक संकेत कार्य करता है।

वह शराब का प्याला उठाता है, और यह शराब का प्याला परमेश्वर के न्याय का प्रतिनिधित्व करता है। पृथ्वी के सभी राष्ट्र इसकी मादक शक्ति के कारण लड़खड़ाएँगे। प्रभु कहते हैं, सबसे पहले, यरूशलेम, यहूदा, शहर, राष्ट्र, वे सभी इसे पीने जा रहे हैं।

लेकिन फिर श्लोक 26 के अंत में कहा गया है, और उनके बाद, बेबीलोन का राजा भी पीएगा। जब हम यिर्मयाह की पुस्तक के अंतिम अध्यायों, अध्याय 50 और अध्याय 51 पर जाते हैं, तो वहाँ संदेश बेबीलोन के विरुद्ध एक न्याय भाषण है, जहाँ परमेश्वर उनका उसी तरह न्याय करने जा रहा है जिस तरह उसने यहूदा का न्याय किया था। यिर्मयाह की पुस्तक के उस भाग के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि यरूशलेम के विरुद्ध कही गई कई भविष्यवाणियाँ ली गई हैं और उन्हें फिर से लागू किया गया है और बेबीलोन के विरुद्ध निर्देशित किया गया है।

उत्तर से एक दुश्मन था जो यहूदा के खिलाफ आने वाला था। उत्तर से एक दुश्मन था जो बेबीलोन के खिलाफ आने वाला था। इसलिए, जैसा कि हम यिर्मयाह के बारे में सोच रहे हैं, जैसा कि हम इस पुस्तक का अध्ययन कर रहे हैं, यह खेल का मैदान है।

यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। एक अविश्वसनीय संकट चल रहा है। यहूदा राष्ट्र अपने अंतिम दिनों में है।

यिर्मयाह उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे रहा है, लेकिन यह यिर्मयाह का संदेश भी है। यह उसका दृष्टिकोण है जो परमेश्वर ने उसे दिया है जो उन्हें आशा भी देगा। बाबुल का सामना करने की कोई उम्मीद नहीं है, लेकिन इससे निर्वासित लोग अच्छे अंजीर बनेंगे।

70 वर्षों के बाद, परमेश्वर उन्हें वापस उस भूमि पर ले जाने वाला है, और आशा का वह संदेश अंततः उन्हें सहारा देगा और उनकी सहायता करेगा, और इसी तरह परमेश्वर अपने लोगों का नवीनीकरण और पुनर्स्थापना करेगा।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी तीसरी प्रस्तुति में हैं। इस तीसरे सत्र का ध्यान

ऐतिहासिक सेटिंग्स पर होगा जो यिर्मयाह की पुस्तक के लिए पृष्ठभूमि की भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से बेबीलोन के साथ इज़राइल के संबंध।